सर्विस समाचार भी सुनाया जाता है। नई सर्विस है ना। अपने ब्राह्मण धर्म वाले जो होंगे उनको तो बहुत खुशी होगी। बाप कोई जास्ती तकलीफ नहीं देते हैं। रहमदिल है ना। बाप आते ही हैं कि जो कि बिचारी अहिल्यायें ,कुब्जायें आदि हैं ,पत्थरबुद्धि हैं उनको उंच उठाने। बच्चे समझते हैं कि सारी दुनियां के मनुष्य मात्र को सदगति मिलनी ही है। जो यहां पढ़ते हैं वो पहले शांतिधाम में जाकर फिर यहां सुखधाम में आवेंगे। बाकी सब शांतिधाम में जाकर अपने समय पर आवेंगे। तुम आये हो पढ़ने लिए। जिनको पढ़ना होगा वो आप ही आवेंगे। तुमको बस यही तात हो कि हम सतोप्रधान कैसे बनें?विष्णुपुरी का मालिक कैसे जाकर बनें?दुनियां भर में यह तात किसको नहीं है। तुमसे बहुत पूछते हैं सबूत दो। तो कहो इतने ढेर ब्र.कु.कु. थोड़े ही अंधश्रद्धा से मां–बाप कहेंगे। ...समझते हैं धीरे2 ब्रांचिज ढेर की ढेर निकलेंगी। बाप तो कहते हैं गली2 में स्वर्गाश्रम खोलो। स्वर्ग में जाने लिए रास्ता बताओ। अब बच्चों को खुशी होगी कि बहुत थोड़े दिन बाकी हैं। हम पुरुषार्थ करते हैं पुरानी दुनियां से मरने लिए जीते जी मरते हैं। तुम बच्चे जानते हो कि हम अभी शिवबाबा के बने हैं। उंच ते उंच बाप जैसी गोद कोई की होती नहीं है। बच्चों को गोद तो मिलनी चाहिए। शिवबाबा कहते हैं मैं तो निराकार हूँ। फिर गोद कैसे दूं?यह टैम्परेरी शरीर लिया है। यहां तो कहेंगे कि हम शिवबाबा की गोद में आते हैं। किसी मनुष्य की गोद में नहीं आते हैं। यह रथ तो मनुष्य का है ;परंतु हम समझते हैं कि हम आपकी गोद में आते हैं। फिर बाप कहते हैं खबरदार रहना फिर किसी मनुष्य की गोद में नहीं जाना है। इतने उंची गोद में जाकर फिर पतित की गोद में जाना शोभता नहीं है। बाप का बन मुख से कहते हैं बाबा हम आपके हैं ,बस। फिर तो गोद की भी दरकार नहीं रही। बाप का बने मुख कहते हैं बाबा हम आपके हैं। इतने ढेर बच्चे होंगे तो बाबा कहां तक गोद में लेते रहेंगे। यह भी बंद हो जावेगा। तुम्हारा तो काम है याद का। गोद का काम ही नहीं। बाबा के सम्मुख आते हो मिलने लिए तो फिर गोद मिले ना मिले कोई हर्जा नहीं है। शिवबाबा को याद करना है। बाप कहते हैं देह सहित सभी सम्बंध तोड़कर अपने को आत्मा समझो। यह निश्चय की बात है कि हम शिवबाबा के बच्चे बने हैं। गोद की भी दरकार नहीं है। समझते हो शिवबाबा पढ़ाते हैं हम वर्सा ले लेंगे। गोद लेकर फिर अगर दूसरे की गोद ली तो गिर पड़ेंगे। अपनी सम्भाल करनी है। घर में रहते हुए सन्यास तो चाहिए ना। देह का भी सन्यास यही तो मेहनत है। सारा मदार ही है योग पर। अभी जो ज्ञान पाते हो वो फिर भूल जावेगा। सतयुग में तुम प्रारब्ध भोगते रहेंगे। यह ज्ञान माताओं के लिए बहुत सहज है। कुमारियों के लिए तो बहुत ही सहज है। कुमारों के लिए भी सहज है। उसमें भी कुमारियों के लिए बहुत ही सहज है। यहां आते हो ज्ञान सागर परमपिता पास जो ही राजयोग सिखाते हैं। बाप है बींज वो सत है ,चैतन है। ....फिर ज्ञान का सागर है। खाना आदि भी आत्मा ही पकाती है ना। आत्मा से पूछते हैं कि तुमने क्या बनाया है?कहती है दाल बनाई है। तो आत्मा ही बोलती हैं ना। संस्कार आत्मा में है। आत्मा कहेगी यह मेरा शरीर है। मालिक आत्मा है ,ना कि शरीर। आत्मा ही कहती है मैं एक शरीर छोड़कर दूसरा लेती हूँ। हम ब्राह्मण भाई2 हैं। ब्राह्मण ही कुल के ठहरे ना। बापदादा हैं और मम्मा है। चाचा, ताया आदि तुम्हारा कोई नहीं है। तुम ईश्वरीय परिवार के हो। उस परिवार (का) साथ रहते हुए भी वो सम्बंध है नहीं। .....इस शरीर द्वारा यह सब धंधा आदि कर रहा हूँ। बाप बार2 कहते हैं देहीअभिमानी भव। अपने को आत्मा समझो। यह नाटक पूरा होता है। शरीर छोड़ना है। ऐसे2 बात करो। तुम्हारा सम्बंध ही बाप से है। बाबा ने हुक्म किया है कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। तुम्हारा धंधा ही यह है। पुराने बंधन ,पुरानी दुनियां को भूल जाना है। नई दुनियां को याद करना है। यह बेहद का बाप तुम आत्माओं को समझाते हैं। उनकी श्रीमत पर चलना है। फिर जिम्मेवार बाप है। ओम।